‘बिहार के तबला वादकों के वादन–वैशिष्ट्य में विभिन्न घरानों एवं परम्पराओं के समावेश का विश्लेषणात्मक अध्ययन’

(पटना, भागलपुर, मुंगेर के विशिष्ट संदर्भ में)

दयालबाग़ ऐजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़,

आगरा से संगीत में पीएच0 डी0 की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध की

रूपरेखा

2018

निर्देशिका : **शोधकर्त्री :**

डॉ० (श्रीमती) रश्मि श्रीवास्तव **मोहिनी गौड़**

एसो० प्रोफेसर

संगीत–विभाग, कला–संकाय

विभागाध्यक्ष : **संकाय प्रमुख :**

प्रो० (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी **प्रो० जे० के० वर्मा**

संगीत–विभाग, कला–संकाय अंग्रेजी–विभाग, कला–संकाय

दयालबाग़ ऐजुकेशनल इंस्टीट्यूट

(डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा–282005

भूमिका

भारत विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि सम्पन्न देश रहा है, जिसमें भिन्न–भिन्न संस्कृतियों का समन्वय रंग–बिरंगे गुलदस्ते की भाँति सुशोभित है। भारत की भौगोलिक पृष्ठभूमि पर दृष्टिपात करें तो उत्तर से दक्षिण तक व पूरब से पश्चिम तक विविधताएँ परिलक्षित होती हैं, सभी दिशाएँ अपने अलग–अलग रंग से भारत को सुशोभित कर रही हैं, जैसे– उत्तरी सीमा पर हिमाच्छादित हिमालय विराजित है, दक्षिण में नील परिधान में लिपटा सागर सुशोभित है, पश्चिम में देखें तो रेगिस्तान स्वर्ण आभा बिखेरता प्रतीत होता है। इन्ही विविध रंगो की भाँति ही भारत का प्रत्येक प्रान्त भी विविधताओं से युक्त अपनी–अपनी क्षेत्रीय आवश्यकताओं, विशेषताओं के अनुरूप रीति–रिवाज, धार्मिक क्रियाकलापों, पर्व, उत्सवों, कलाओं, भाषा व बोलियों से युक्त दृष्टिगोचर है, जो अपनी–अपनी विशेषताओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति को समृद्ध व गौरवशाली बनाने में योगदान दे रहे है।

कहने का तात्पर्य यह है कि भारत की भौगोलिक पृष्ठभूमि में जिस प्रकार के रंग परिलक्षित होते हैं, उसी प्रकार भारत के विभिन्न राज्यों में भी अलग–अलग बोलियाँ, भाषाएँ, संस्कृतियाँ, मान्यताएँ एवं रीति–रिवाज हैं और इन्ही को प्रतिबिम्बित करती हुई कलाओं में भी वहीं अलग–अलग रंग दिखाई देते हैं। ये कलाएँ कभी काव्य कला के रूप में प्रस्फुटित होती हैं, तो कभी चित्र कला, कभी मूर्ति कला, कभी वास्तुकला, तो कभी संगीत कला के रूप में मन को झंकृत कर देती हैं।

भारतीय संगीत में भी भिन्न–भिन्न संस्कृतियों की झलक दिखाई पड़ती है। इस दिशा में यदि हम बिहार राज्य की ओर दृष्टिपात करें तो बिहार में शास्त्रीय एवं लोकसंगीत की धारा सदियों से निरन्तर चली आ रही है, बिहार राज्य में संगीत–परम्परा का इतिहास पुराना है, दरभंगा, भागलपुर व बेतियाँ घराने संगीत के लिए प्रसिद्ध हैं, बिहार ध्रुपद, धमार व ठुमरी के माध्यम से संगीत जगत में अपनी पहचान बनाए हुए है, बिहार के संगीत में गायन व वादन की अपनी–अपनी समृद्ध व गौरवशाली परम्पराएँ रही हैं। इनमें यदि हम वादन विधा पर दृष्टिपात करें

तो पखावज के क्षेत्र में गया व दरभंगा के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है। तबला वादन के क्षेत्र में भी इस प्रदेश की भागीदारी 'बढ़ईया की परम्परा' के रूप में वर्णित की जा सकती है।

पृष्ठभूमि

तबला वादन के क्षेत्र में मुख्य रूप से छः घराने सर्वमान्य हैं, जिनमें दिल्ली घराना, अजराड़ा घराना फरूर्खाबाद घराना, बनारस घराना, लखनऊ घराना, पंजाब घराना एवं इनके अतिरिक्त अनेकों परम्पराएँ भी हैं, प्रत्येक घराने की अपनी विशिष्ट वादन शैली है, जो उस क्षेत्र विशेष की आवश्यकताओं व सांगीतिक विशेषताओं के अनुरूप रची बसी है, यद्यपि बिहार राज्य से उक्त घरानों में से कोई भी घराना सम्बंधित नहीं है, तथापि इन घरानों के कलाकारों से सीखे हुये अनेकों शिष्य शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् अपने–अपने कार्यक्षेत्र व जन्म–स्थान आदि में पहुँच कर अपनी साधना, ज्ञान आदि के माध्यम से तबला वादन के प्रचार–प्रसार एवं विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दे रहे हैं। यह तो सर्वविदित है कि कलाकार पर उसके सांगीतिक वातावरण, जनरूचि व आवश्यकताओं का प्रभाव पड़ता है, जो कि ज्ञान के विस्तार में एवं कला के निखार में आवश्यक है।

समस्या का प्रार्दुभाव

जैसा कि पूर्वोक्त विवरणों से स्पष्ट ही है कि बिहार में तबले का कोई पृथक घराना नहीं है, अपितु प्रचलित छः घरानों से सम्बंधित कलाकार ही अपने वादन कौशल से इस धरा को सुशोभित कर रहे हैं। तथापि बिहार में तबले की बढ़ईया परम्परा भी अपनी शैलीगत भिन्नता के कारण ताल जगत में लोकप्रिय हुई।

शोधकर्त्री चूँकि तबला वाद्य की छात्रा है एवं बिहार से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो बिहार के तबला वादको के वादन–वैश्ष्ट्यि के विषय में जिज्ञासा जाग्रत हुई कि बिहार के तबला वादको के वादन में क्या मुख्य विशेषताएँ है? बिहार में प्रचलित संगीत के वातावरण का उनके वादन पर किस प्रकार प्रभाव परिलक्षित होता है अथवा उनके वादन–वैश्ष्ट्यि में किन–किन घरानों

व परम्पराओं का समावेश दिखाई देता है? इन सभी बिन्दुओं से सम्बंधित जानकारी की प्राप्ति हेतु शोधकर्त्री ने तत्सम्बन्धी साहित्य का अवलोकन किया वह निम्नवत् हैः–

क्र0 सं0	शोध प्रबन्ध	शोधार्थी	सन्	विश्वविद्यालय
1.	बिहार में गाए जाने वाले लोकगीतों का तुलनात्मक अध्ययन	अनिरूद्धप्रसाद सिंह	1994	इन्दिरा कला संगीत संस्थान, खेरागढ़
2.	बिहार प्राप्त के भोजपुर क्षेत्र के लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत तत्वों का अध्ययन एवं विवेचन	इन्दुरायजादा	1997	रुहेल खण्ड वि.वि. बरेली
3.	दक्षिण बिहार के कुरमाली लोकगीतों में शास्त्रीय संगीत के तत्वः एक अध्ययन	सुचित्रा महतो	2001	इन्दिरा कला संगीत संस्थान, खेरागढ़
4.	बिहारी लोकसंगीत में प्रयुक्त सांगीतिक शब्दावली का अध्ययन	राजिन्दर सिंह तोमर	2004	हिमाचल प्रदेश वि.वि.
5.	ध्रुपद अंग की गायकी के विकास की परम्परा में बिहार के संगीतज्ञों का सीन	कामोद पाठक	2005	बी.आर. अम्बेडकर, बिहार
6.	बिहार के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में मिथिलांचल का सांगीतिक योगदान	पिंकी शुक्ला	2008	दिल्ली विश्वविद्यालय
7.	बिहार की भागलपुर संगीत परम्पराः भारतीय संगीत में योगदान	सौरभ कुमार नाहर	2014	इन्दिरा कला संगीत संस्थान, खेरागढ़
8.	हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के विकास में बिहार राज्य का योगदान एक अध्ययन	शिवानी श्रीवास्तव		वनस्थलि विद्या पीठ
9	दरभंगा राज, ध्रुपद गायकी की परम्परा	कृष्ण कुमार सिन्हा	2004	बी.आर. अम्बेडकर, बिहार

क्र0 सं0	पुस्तकें एवं पत्रिकायें	लेखक/सम्पादक	सन्
1.	पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें	डा० आबान मिस्त्री	द्वितीय संस्करण 2000
2.	संगीत चिन्तन	डां0 अम्बिका कश्यप	2016
3.	गग्नाञ्चल	अजय कुमार गुप्ता	

उपर्युक्त वर्णित विवरणों व शोधछात्रा के संज्ञान में आये अब तक हुए शोधकार्यो को दृष्टिगत रखते हुए कहा जा सकता है कि यद्यपि बिहार अपने सांगीतिक दृष्टिकोण से तीनों

विधाओं (गायन, वादन, नृत्य) में समुचित समृद्धशाली है, जहाँ गायन, वादन से सम्बंधित ध्रुपद, धमार, ठुमरी व भोजपुरी लोकगीतों आदि के विषय में तो जानकारी मिलती है, किन्तु यहाँ तबला वादकों एवं उनके के वादन–वैश्ष्ट्यि से सम्बन्धित पूर्णतः जानकारी नहीं उपलब्ध हो पाई।

अस्तु बिहार के तबला वादकों व उनके वादन–वैशिष्ट्य के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर संगीत विद्यार्थियों के समक्ष उपलब्ध कराने के दृष्टिकोण से शोधकर्त्री द्वारा उक्त शोध विषय का चयन किया गया है।

विषय कथन

"बिहार के तबला वादको के वादन–वैश्ष्ट्यि में विभिन्न घरानों एवं परम्पराओं के समावेश का विश्लेषणात्मक अध्ययन' (पटना, भागलपुर, मुंगेर के विशिष्ट संदर्भ में)"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

बिहार– (पुल्लिंग) बिहारः

अमर मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार– भारतवर्ष का एक राज्य जो उत्तर प्रदेश के पूरब में पड़ता हैं।

तबला – (संज्ञा, पुल्लिंग, फा0)

भाषा शब्दकोश के अनुसार – बड़ा ढ़ोल (नगाड़ा डंका) तबला एक बाजा

वादक – (पुल्लिंग, संज्ञा)

अमर मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – शास्त्रार्थ करनेवाला, बोलनेवाला, बजानेवाला, ढ़ोल बजाने वाला एक खास ढंग।

वादन (पुल्लिंग, संज्ञा)

लोकभारती प्रमाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – बाजा बजाना।

वैशिष्ट्य – संज्ञा, पुल्लिंग –

भाषा शब्दकोश के अनुसार – विशेषता, श्रेष्ठता।

घराना (पुल्लिंग)

लोकभारती प्रमाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार– (हि0 घर+ आना (प्रत्य0) खानदान, वंश

परपंरा – (स्त्रीलिंग संज्ञा) ने टूटनेवाला क्रम, अनुक्रम, अटूट सिलसिला, क्रमबद्ध समूह या पंक्ति।

विश्लेषण – (पुल्लिंग, संज्ञा)

अमर मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – पृथक करना, किसी चीज़ के अंगों को या उसके अलग–अलग गुणों का स्पष्ट करना।

शोध का महत्व

प्रस्तुत शोध प्रबंध के माध्मम से बिहार में प्रचलित संगीत के विषय में जानकारी तो प्राप्त होगी ही साथ ही साथ क्षेत्रीय कलाकारों के परिचय, संगीत के क्षेत्र में किये गये कार्यो, शैलीगत भिन्नता के साथ विभिन्न घरानों व परम्पराओं के प्रभाव के फलस्वरूप उनके वादन–वैशिष्ट्य आदि के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त हो सकेगी साथ ही उन कलाकारों द्वारा बजायी जा रही परम्परागत बंदिशों को भी उजागार किया जा सकता है, जिसके माध्यम से जहाँ एक ओर विद्यार्थियों को परम्परागत बंदिशों की जानकारी प्राप्त हो सकेगी वहीं उन दुलर्भ बंदिशों के प्रचार–प्रसार में भी उक्त शोध–प्रबंध सहायक सिद्ध हो सकेगा

अध्ययन के उद्देश्य

- बिहार की सांगीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- बिहार के तबला वादको एवं उनके द्वारा संगीत के क्षेत्र में किये गये कार्यो की जानकारी प्राप्त करना।

- बिहार के तबला वादकों द्वारा बजाई जा रही प्रचलित बंदिशों का लेखन करना।
- बिहार के तबला वादको के वादन–वैश्ष्ट्यि पर विभिन्न घरानों व परम्पराओं के समावेश का अध्ययन करना।

परिसीमांकन

प्रस्तुत शोध, कार्य एवं समय–सीमा को देखते तथा हुए विषय का गहनता पूर्वक अध्ययन करने हेतु बिहार राज्य के 20–25 कलाकरों के जीवन परिचय एवं उनके वादन–वैश्ष्ट्यि के विश्लेषणात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा।

अध्ययन की विधि

साक्षात्कार, विवरणात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि।

अध्ययन के स्त्रोत

पुस्तकालय, पत्र–पत्रिकाएँ, विद्वानों से विचार–विमर्श।

अध्ययन के उपकरण

दृश्य–श्रव्य सामग्री (टेप रिकार्डर, कम्प्यूटर लेपटॉप मोबाइल फोन)

अध्ययन की रूपरेखा

भूमिका

प्रथम अध्यायः

बिहार राज्य की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।

द्वितीय अध्यायः

पटना के तबला वादको का परिचय।

तृतीय अध्यायः

भागलपुर एवं मुंगेर के तबला वादको का परिचय।

चतुर्थ अध्यायः

बिहार के प्रसिद्ध तबला वादको की बंदिशों का लेखन।

पंचम अध्याय:

बिहार के तबला वादको के वादन–वैश्ष्ट्य पर विभिन्न घरानों एवं परम्पराओं के समावेश का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

उपसंहार :

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

क्र0 सं0	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1.	मिस्त्री0 डां0 आबान	पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें	पं0 केकी0 जिजिना स्वर साधना समिति मुम्बई, द्वितीय संस्करण 2000
	डां0 कश्यप, अम्बिका मिस्त्र,डां0 शिव नारायण	संगीत चिंतन (बिहार के संगीत घरानें एवं परम्परायें)	कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2016
3.	सुदर्शन राम, डां0	तबले के घरानें वादन शौलियाँ एवं बन्दिशे	कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008
4.	मित्तल, अंजलि	भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत	कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003
5.	शुक्ल, डां0 योगमाया	तबले का उद्गम विकास और वादन शैलियाँ	हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली प्रथम संस्करण 1987

पत्रिकाऐं

क्र0 सं0	सम्पादक का नाम	पत्रिका का नाम	प्रकाशक
1.	गुप्ता, अजय कुमार	गग्नाञ्चल	पवन कुमार वर्मा, भारतीय सांस्कृतिक सबंध परिषद् आजादभवन नई दिल्ली
2.	मेहता डां0 मधुप	गंग्नाञ्चल	राकेश कुमार, भारतीय सांस्कृतिक सबंध परिषद् आजाद भवन नई दिल्ली
3.	मेहता डां0 मधुप	गंग्नाञ्चल	राकेश कुमार, भारतीय सांस्कृतिक सबंध परिषद् आजाद भवन नई दिल्ली
4.	केसकर श्री रघुनाथ	संगीत कला विहार	सुरदास केडगांव देवी रोड, अहमदनगर

<u>कोश ग्रन्थ</u>

क्रं सं0	लेखक का नाम	कोश का नाम	प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1.	शर्मा, रामचन्द्र	लोकभारती प्रमाणिक हिन्दी कोश	लोकभारती प्रकाशन ,तृतीय संस्करण,1996
2.	दीक्षित, कृष्ण कान्त	अमर मानक विशाल हिन्दी शब्दोश	कमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण,2005
3.	शुक्ल डां0,रामशंकर 'रसाल'	भाषा शब्द कोश	रामनारायण लाल बेनीप्रसाद प्रथम संस्करण ,1936